उपादान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक शास्त्रोक्त तथ्यों का पूर्णसत्यापन यत्-किंचित् रूप से असम्भव ही है। अतः वर्तमान में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही जिज्ञासु धर्म या शास्त्रों की गहनता पर अश्रद्धा व्यक्त करे तो यह कदाचित असगत व अनापेक्षित ही होगा !

इस पृष्ठ भूमि में पँ० मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल' द्वारा विश्लेषित व विवेचित लेखन बोधगम्य व सारगर्भित प्रतीत होता है। "विचार चर्चा के रूप में यह पाठकों में तात्विक चिंतन व अनेक शंकाओं के वास्तविक रूप समझने एवं उनके समाधानों के लिये सहायक सिद्ध होगा, ऐसी आशा है।

पारसमल चौरड़िया
एम० कॉम०
प्राध्यापक
राजर्षि महाविद्यालय, अलवर (राज०)

प्रकाशकीय

वर्तमान में वैज्ञानिकों द्वारा चन्द्रलोक के वर्णन व आगमों के चन्द्र वर्णन को लेकर आजकल जो उहापोह चल रहा है, इस सम्बन्ध मे मैंने अत्र विराजित शास्त्रज्ञ पँ० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा० से अपने विचार प्रकट करने का निवेदन किया। इस पर म० श्री ने अपने विचार प्रकट किये वे काफी चिंतन पूर्ण व शोध के लिए आवश्यक होने से मैंने उन्हें प्रकाशित करना आवश्यक समझा। पूज्य मुनिराजों से व अन्य विद्वानों से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में आपके विचार प्रेषित करने की कृपा करावें।

शांतिलाल सचेती
मदनगंज-किशनगढ़

चिन्तन के चरण चिह्न

* श्री *

जगत्काय स्वभावौ च संवेग वैराग्यार्थम् ।

तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय ७ सूत्र ७ ।

भूगोल खगोल विषयक विज्ञान से जगत स्वरूप का ज्ञान होता है। जगत स्वरूप के ज्ञान से जगत स्वभाव का चिंतन किया जाता है । जगत स्वभाव के चिंतन से वैराग्य प्राप्त होता है।

❀ संयम साधना में विज्ञान का महत्व ❀

प्रश्न—श्रमणों की पर्युपासना का क्या फल है ?

उत्तर— शास्त्र श्रवण ।

प्रश्न—शास्त्र श्रवण का क्या फल है ?

उत्तर—ज्ञान ।

प्रश्न—ज्ञान का क्या फल है ?

उत्तर—विज्ञान[1] —हेयोपादेय का निर्णय ।

प्रश्न— विज्ञान का क्या फल है ?

उत्तर—प्रत्याख्यान- हिंसा आदि महापापों से निवृत्ति का दृढ़ संकल्प ।

प्रश्न—प्रत्याख्यान का क्या फल है ?

उत्तर—संयम[2]

१—भौतिक विज्ञान का उद्देश्य ऐहिक सुख है और आध्यात्मिक विज्ञान का उद्देश्य शाश्वत सुख है । यहाँ प्रतिपाद्य विषय आध्यात्मिक विज्ञान है ।

२—स्थानांग सूत्र १९० ।

तटस्थ चिन्तन

सर्वज्ञ का कथन और प्रत्यक्षानुभव

अपोलो ११ के अन्तरिक्ष यात्रियो की चन्द्रयात्रा का वृत्तान्त पढकर या सुनकर इस भौतिक युग के मानव की श्रद्धा सर्वज्ञकथित सिद्धान्तो के प्रति उत्तरोत्तर शिथिल होती जा रही है। अतः वह विज्ञान के आलोक मे समाधान पाने के लिये तत्त्वचितको के सामने अपनी जिज्ञासाए पुन. पुनः प्रस्तुत कर रहा है।

१—यह भूलोक (जिस पर आप और हम जीवन यापन कर रहे हैं) अनन्त आकाश मे किस पर टिका हुवा है ?

२—क्या कुछ ऐसे द्रव्य हैं जिन पर यह विशाल भूलोक स्थिर है या यह भूलोक ही ऐसे द्रव्यो से निष्पन्न है जो स्वय ही इस अनन्त आकाश मे स्थिर है ?

३—यह भूलोक कितना विशाल है और इसकी लम्बाई, चौडाई एव परिधि कितनी है ?

४—इस भूलोक पर कितने विशाल पर्वत, समुद्र और सरिताए हैं ?

५—इस भूलोक के नीचे और ऊपर कितने भूलोक है और उनकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी है ?

६—ये चक्षु गोचर चन्द्र, सूर्य आदि हमारे इस भूलोक जैसे ही लोक हैं या अन्य प्रकार के हैं ?

७—हमारे दृष्टि पथ में न आने वाले या आधुनिकतम दूरदर्शक यन्त्र से भी न दिखाई देने वाले कुछ और लोक भी है या नही ?

८—इस भूलोक से चन्द्र सूर्य आदि लोक कितनी दूर हैं और वहा का जलवायु कैसा है ? वहा पर हमारे जैसे चैतन्य प्राणी है या नही ?

आज के मानव की ये जिज्ञासायें अतीत के शास्त्रीय समाधानो से सुलझी नही हैं क्योकि पुरातन दर्शन प्रवर्तको ने जो समाधान सुझाये थे वे एक

दूसरे से इतने भिन्न है कि उन समाधानो से इस युग मे उन दर्शन प्रवर्तकों के प्रति केवल अनास्था ही बढी है।

आश्चर्य तो यह है कि समाधान करने वाले सभी महापुरुष सर्वज्ञ माने गये है फिर भी उनके समाधानो मे परस्पर सामजस्य नही है। यह असामजस्य ही उन सर्वज्ञो की सर्वज्ञता को चुनौती दे रहा है और श्रद्धा के सुदृढ प्राचीर को प्रकम्पित कर रहा है। यदि वे दर्शन प्रवंतक सभी सर्वज्ञ थे तो इन सबके लिखे परिमाणो मे समानता क्यो नही है, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

यदि इनमे से एक सर्वज्ञ था और शेष सब असवज्ञ थे तो उस एक सर्वज्ञ की सर्वज्ञता को हम सर्वज्ञता कैसे समझे। अर्थात् उसकी सर्वज्ञता का हमे कैसे अनुभव हो, क्योकि हम असर्वज्ञ है, इसलिए सर्वज्ञ की सर्वज्ञता को समझना हमारे लिये कैसे सम्भव है? इसके लिये एक प्रसिद्ध उदाहरण है :— एक सचक्षु, सचक्षु और अचक्षु दोनो को देख सकता है, किन्तु अचक्षु, सचक्षु और अचक्षु दोनो को ही नही देख सकता। इसी प्रकार सर्वज्ञ, सर्वज्ञ और असर्वज्ञ की भेद रेखा को जान सकता है, किन्तु असर्वज्ञ, सर्वज्ञ और असर्वज्ञ की भेद रेखा को नही जान सकता। फिर भी इन्द्रिय प्रत्यक्ष पदार्थों के सम्बन्ध मे यह एक तथ्य है कि जैसा सर्वज्ञ ने कहा है वैसा ही यदि प्रत्यक्ष दिखाई दे, तो उसे सवंज्ञ का कथन मानने मे हमे कोई आपत्ति नही है। यही एक सर्वज्ञता की कसौटी है, जिस पर सर्वज्ञता परखी जा सकती है।

प्रत्यक्षानुभव करके ही सर्वज्ञ के सभी वचनो पर श्रद्धा की जाय, यह भी सम्भव नही है। क्योकि कुछ इन्द्रिय प्रत्यक्ष पदार्थ और समस्त अतीन्द्रिय विपय ऐसे है जो हमारे लिये केवल श्रद्धागम्य है।

अनुभव सिद्ध सर्वज्ञ के कतिपय कथन यदि किसी आगम मे है और उसी आगम मे सर्वज्ञ के नाम से कहे गये कुछ कथन ऐसे भी है जो अनुभव की कसौटी पर खरे नही उतरते है तो हमे केवल अनुभव सिद्ध कथनो पर ही श्रद्धा करनी चाहिये और इन्द्रियगम्य पदार्थों के सम्बन्ध मे हमें अनुभव की कसौटी का विवेक पूर्वक उपयोग करना चाहिये।

चन्द्र चर्चा से पहले

चन्द्र चर्चा से पहले हमे यह जान लेना आवश्यक है कि इस समय इस चन्द्र चर्चा की आवश्यकता क्या है ?

इस संदर्भ मे जैनागमों मे वर्णित चन्द्र और वैज्ञानिको द्वारा प्रत्यक्ष दृष्ट चन्द्र की असमानता ही एकमात्र हेतु है।

१—जैनागमो मे वर्णित चन्द्र सूर्य से ऊपर है[1] जबकि वैज्ञानिको द्वारा प्रत्यक्ष दृष्ट चन्द्र सूर्य से नीचे है।[2]

२—जैनागमो मे वर्णित चन्द्र एक देवेन्द्र है और उसका विमानावास यह प्रत्यक्ष दृष्ट चन्द्र लोक है। इसके विपरीत वैज्ञानिकों का दृष्ट प्रत्यक्ष चन्द्र है। न वहां देव-देवियां है, न देवेन्द्र चन्द्र है और न उसके रम्य भवन है। वहां केवल विशाल मैदान, पर्वत या गह्वर है। इस विचार चर्चा मे चन्द्र के सम्बन्ध मे संक्षिप्त चर्चा की गई है, साथ ही चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्रो की गति-विधि का ज्ञान श्रमण चर्या मे संयम का साधक है, यह भी संक्षेप मे सिद्ध किया गया है।

चन्द्र सूर्य से ऊपर है या नीचे ?

चन्द्र सूर्य से ऊपर है या नीचे, यह विवाद नया नही पुराना है। अपोलो ११ द्वारा चन्द्र पर मानव को उतारने और पुन. धरती पर लौटाने के पश्चात् यह विवाद सर्व साधारण के सामने पुन· उभर आया है। अतः इस सम्बन्ध मे जैनागमो के मन्तव्यो पर भी विचार करना है। जैनागमो मे चन्द्र लोक सूर्य लोक के ऊपर माना गया है, किन्तु पांच ज्योतिष्क लोको मे सर्व-

---

१—समतल भूमि से ८०० योजन ऊँचा सूर्य है और उससे ८० योजन ऊपर चन्द्र है।

२—वैज्ञानिको की दृष्टि मे चन्द्र की ऊँचाई ढाई लाख मील दूर है।

प्रथम चन्द्रलोक का नाम है। ज्योतिष्क लोको के नाम गणना के रूप में चन्द्र से पूर्व सूर्य का नाम किसी भी जैनागम में नही है। इससे यह आशका होती है कि क्या किसी युग मे जैनागमो की मान्यता पहले चन्द्र और पश्चात् सूर्य की अवस्थिति की रही है ? किन्तु सूर्य प्रज्ञप्ति के सकलन कर्त्ता के सामने प्रथम सूर्य और पश्चात् चन्द्र की अवस्थिति मानने वाले ही अनेक आचार्यों का मत है। सूर्य प्रज्ञप्ति मे एतद् विषयक जितनी प्रतिपत्तीया हैं वे सब प्रथम सूर्य और पश्चात् चन्द्र की अवस्थिति मानने वाली है।[१]

अत. यह स्पष्ट है कि प्रथम चन्द्र और पश्चात् सूर्य की अवस्थिति मानने वाले भारतीय आचार्यों के मत सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलन कर्त्ता के सामने नही थे।[२]

लोगस्स[३] के पाठ मे प्रथम चन्द्र और पश्चात् सूर्य का कथन है।

जीवाजीवाभिगम[४] मे जम्बूद्वीप आदि द्वीपो के तथा लवण समुद्र आदि समुद्रो के चन्द्रद्वीप और सूर्यद्वीप का वर्णन करते हुये चन्द्र द्वीप का वर्णन पहले और सूर्यद्वीप का वर्णन पीछे किया गया है।

---

१. (क) चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्र ९२। (ख) सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र ९२।
(ग) जीवा० सूत्र १९६। (घ) जम्बू० सूत्र १६४।

२. सिद्धान्त शिरोमणी (गणिताध्याय) भास्कराचार्य ने पृथ्वी से ५१५६६ योजन की ऊँचाई पर चन्द्र और ६८९३७७ योजन की ऊँचाई पर सूर्य माना है। उनकी इस मान्यता का आधार क्या है ! यह अभी तक शोध का विषय है। —चन्द्रग्रहणाधिकार पृ० ३६५

३. "चन्देसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहिय पयासयरा।"

४. जीवा० सूत्र १६२।

जीवाजीवाभिगम[१] मे सर्व प्रथम चन्द्र विमान परिवहन का विस्तृत वर्णन किया है। सूर्य विमान परिवहन चन्द्र वर्णन के समान समझने के लिये "—व" शब्द से सूचित किया है।

दस औदारिक[२] अस्वाध्यायो मे पहले चन्द्रग्रहण और पश्चात् सूर्यग्रहण कथन है और इसी प्रकार दीर्घ दशाके दस अध्ययनो मे प्रथम अध्ययन चन्द्र और द्वितीय अध्ययन सूर्य का है।

स्थानागसूत्र[३] मे पाच ज्योतिष्क लोको का वर्णन करते हुये पहले चद्र र पीछे सूर्य आदि लोको का वर्णन किया है।

प्रज्ञापना[४] के द्वितीय स्थान पद मे नो ग्रहो के नाम है। इनमे भी प्रथम चन्द्र और पश्चात् सूर्य का कथन है।

---

१. जीवा. सूत्र १९८।

२. (क) स्थानाग० सूत्र ७१४ (ख) स्थानाग सूत्र ७५५।

३ पचविहा जोइसिया पण्णता तजहा--

१ चदा, २ सूरा ३. गहा ४. नक्खता ५. ताराओ

स्थानाग० अ ५ अ १ सूत्र ४०१

इन पांच ज्योतिष्क लोको के सम्बन्ध मे आगमविदो का यह मन्तव्य है कि यह क्रम ऊँचाई की अपेक्षा से नही है, अपितु प्रधानता की अपेक्षा से है। समस्त ज्योतिष्क लोको मे प्रधान चन्द्र लोक है, शेष लोक क्रमश: हीन, हीनतर और हीनतम ऋद्धि वाले है। चन्द्रलोक और सूर्यलोक अन्य ज्योतिष्क लोको की अपेक्षा इस पृथ्वी से दूर नही है। अतएव ये परिमाण मे हमे बडे दिखाई देते है और इन दो का ही (सूर्य की आतप और चन्द्र की ज्योत्स्ना) प्रभाव इस पृथ्वी पर सबसे अधिक है इसलिये इन्हे (इन्द्र) प्रधान माना गया है। किन्तु इस पृथ्वी से ऊँचाई के क्रम मे सर्व प्रथम तारा है, उनसे ऊपर सूर्य और चन्द्र है। चन्द्र से ग्रह एव नक्षत्र हैं।

४. प्रज्ञा० पद २ सूत्र।

आचार्य उमास्वाती ने चन्द्र से पहले सूर्य कहा है। यह क्रम आगम मे वर्णित गणनाक्रम से विपरीत है फिर भी सूर्य प्रज्ञप्ति में अंकित स्वगत, परमत की प्रतिपत्तियो तथा वैदिक पुराण ग्रन्थो के मन्तव्यानुसार ठीक है।[1]

अब प्रश्न यह है कि प्रत्यक्ष सिद्ध वैज्ञानिक क्रम को सत्य मानने क्या आपत्ति है ?

वैज्ञानिकों ने चन्द्र पर सूर्य की आतप देखी है। वहाँ चौदह दिन (यहा के दिन के हिसाब से) निरन्तर सूर्य दिखता है और १४ दिन रात्रि रहती है। यह आखो देखा सत्य है। इसे स्वीकार करने मे किसी किसी प्रकार की आपत्ति नही होनी चाहिये, क्योकि जैनागमो मे सर्वत्र प्रथम चन्द्र और पश्चात् सूर्य का कथन है। ऊंचाई के क्रम मे जो प्रथम सूर्य और पश्चात् चन्द्र का कथन है, यह प्रत्यक्षानुभव से विपरीत है। इसलिये इस सम्बन्ध मे और अधिक चिंतन मनन होना चाहिये।

चन्द्र सूर्य की ऊँचाई के सम्बन्ध मे ज्योतिर्विदो की यह धारणा है कि चन्द्रादि ग्रह कभी पृथ्वी से दूर होजाते है और कभी पृथ्वी के निकट होजाते है। यदि इस धारणा के अनुसार किसी अज्ञात काल मे चन्द्रग्रह पृथ्वी से दूर एव सूर्य ग्रह पृथ्वी के निकट रहा हो तो हमे यह मान लेना चाहिये कि जैनागमो मे चन्द्र सूर्य आदि की दूरी उसी युग की अंकित है। किन्तु इस सम्बन्ध मे और अधिक शोध की जाय तथा धारणा का सुदृढ आधार ज्ञात किया जाय।

"आगम वर्णित चन्द्र में भी मिट्टी पत्थर है।"

जैनागमो मे चन्द्र से सम्बन्धित अनेक तथ्य अंकित है। किंतु प्राचीन प्राकृत भाषा की लेखन शैली के आवरण से वे इतने आवृत है कि सहसा उन तथ्यो पर हमारा ध्यान केन्द्रित नही हो पाता। "ज्योतिष्क लोक (चन्द्र) मे मिट्टी और पत्थर भी है ......" यह तथ्य इतने स्पष्ट शब्दो मे प्रकट

---

१. सूर्याश्चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्ण-तारकाश्च। तत्वार्थ सूत्र अ० ७

किया गया है कि उसे सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है। "..........चन्द्र पर गगनतल को चूमने वाले अनेक शिखर है .... तपे हुये स्वर्ण की मनोहर बालुका (बालू मिट्टी) का प्रस्तर–भूमितल है .....।"[1] चद्र वर्णन का यह अंश वैज्ञानिक चद्र वर्णन से कितना अधिक साम्य रखता है।[2]

जैनागमो मे प्राय: रूपक या आलंकारिक भाषा मे अनेक वर्णन लिखे है। चद्रलोक का वर्णन भी आलंकारिक एव रूपक की भाषा मे लिपिबद्ध किया गया है। इसलिये चद्रलोक को एक आवास मानकर चित्रित किया है। . हमे पूरा चंद्रलोक एक भवन ज्ञात होता है किंतु यह प्राचीनकाल की केवल न शैली है। जैनागमो के पाठको को चाहिये कि वे पहले आगम काल की षा शैली का अध्ययन करे।

चन्द्रलोक में जीवन का अस्तित्व

अपोलो ११ की चन्द्र यात्रा के पश्चात् जनमानस मे यह प्रश्न बार-बार उठ रहा है कि चन्द्र लोक मे जीवन है या नही ?

चन्द्र लोक मे चन्द्र देवेन्द्र है तथा उनकी देवियां और अनुचर देव-परिवार है—यह धारणा जैन, बौद्ध और वैदिक धर्म ग्रन्थो मे अङ्कित है किंतु

---

१. 'गगनतलमहिलघमाणसिहरा ... ... तवणिज्ज–रुइल–बालुयापत्थड़ा..... ...." जीवा० सूत्र १२२।

२. चद्रतल के बारे मे उन्होने (चन्द्रयात्री ने) कहा कि जगह-जगह बड़े पत्थर दिखाई देते है। चन्द्रतल सख्त है और यहा की मिट्टी रेगिस्तान जैसी है .... उमने कहा कि जहा हम उतरे उससे कुछ ही दूरी पर हमने बैगनी रग की चट्टान देखी, चन्द्रमा की मिट्टी और चट्टानें सूर्य की रोशनी मे चमक रही थी, यह एक भव्य एकान्त स्थान था।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान वर्ष १९ अङ्क ४४ दिनाक ३ अगस्त पृ० १० तथा १३।

अन्तरिक्ष यात्रियो ने अब तक वहाँ किसी प्राणधारी को नही देखा है, इसलिये वे चन्द्रलोक को केवल विशाल रिक्त स्थल मानते हैं।

इस सम्बन्ध मे निम्नाकित विषयो पर चिंतन आवश्यक है।

(१) चन्द्र यात्रियो द्वारा जिस दिन पूरे चन्द्रलोक की परिक्रमा करली जायगी उसी दिन यह अन्तिम निर्णय होगा कि चन्द्रलोक मे कोई प्र. नही है।

(२) चन्द्रलोक मे जो मिट्टी पत्थर आदि लाये गये हैं, उनका परीक्षण हो चुका है। वहाँ के मिट्टी पत्थर जीवन विरोधी नही है, यह अनुभव हो चुका है। वहाँ की मिट्टी उपजाऊ है। यह भी परीक्षणो से सिद्ध हो चुका है। यदि वहा जल मिल गया तो जीवन की सम्भावना सुनिश्चित है। जहा पृथ्वी है, वहां जल, अग्नि, वायु आदि भी होने चाहिये, क्योकि इन सब का अविनाभाव सम्बन्ध है।

(३) इस पृथ्वी पर भी अनेक मरुस्थल या हिमप्रदेश है—जहां आज तक भी मानव निवास नही कर सका—पर इसका यह अर्थ नही कि पृथ्वी पर जीवन ही नही है।

(४) पूरे चन्द्रलोक का पर्यवेक्षण करने पर भी यदि वहा देव-देविया या जीवनधारी प्राणी दिखाई नही देवे तो भी कोई असंगति नही होगी—क्योकि जैनागमो के अनुसार इस जम्बूद्वीप के चन्द्रादि देवो की राजधानिया लवण समुद्र के अन्तर्गत चन्द्रादि द्वीपो मे हैं। चन्द्रद्वीप की शोध पर फिर कभी विचार प्रस्तुत किये जावेंगे।

(५) देव शब्द का अर्थ दिव्य अर्थात् प्रकाशमान होता है। यह अर्थ चन्द्रलोक से सम्बन्धित है, इसलिये चन्द्रदेव है, यह मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिये। चन्द्र-कलायें ही चन्द्र की देविया है, इत्यादि रूपकों की भाषा का संगत अर्थ किया जा सकता है।

— ———

"चन्द्रलोक में मानव जा सकता है"

जैनागमों के अनुसार जंघाचारण या विद्याचारण मुनि मेरु पर्वत की चूलिका या मानुषोत्तर पर्वत पर जा सकते हैं[1] तो अन्तरिक्ष यात्री चन्द्र पर ो नही जा सकता।

ंहैं मुनि जिस लब्धिबल से इतनी ऊँचाई पर जाता है वह भी भौतिक ्ति ही है। और अन्तरिक्ष यात्री जिस यान से जाते हैं वह यान भी भौतिक ्क्ति सम्पन्न ही है।

मुनि को जो लब्धि प्राप्त है वह आध्यात्मिक विज्ञान से प्राप्त है और न्तरिक्ष यात्रियो को जो भौतिक शक्ति प्राप्त है वह भौतिक विज्ञान से ाप्त है।

चन्द्रतल की तोड़ फोड़ और भवन निर्माण

जैनागमो मे चन्द्रलोक को शाश्वत माना गया है। अतः इस भौतिक युग मे शाश्वत के सदर्भ मे कुछ चितन मनन आवश्यक होगया है।

शाश्वत स्थान या पदार्थ का सस्थान सदा एक समान रहता है। यदि शाश्वत की यही व्याख्या है तो उस समानता का क्या अर्थ है।

इस पृथ्वी पर विकास काल (उत्सर्पिणी) और ह्रास काल (अवसर्पिणी) मे अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। जहा नगर है वहां श्मशान और जहा श्मशान है वहां नगर आबाद होते हुये प्रत्यक्ष देखे जा रहे हैं। पर्वत, सरिताये और समुद्रो मे भी परिवर्तन होते रहते हैं। पर इन परिवर्तनो से

---

१ मेरु की चूलिका सम पृथ्वीतल से ९९ हजार योजन ऊँची है और मानुषोत्तर पर्वत १७२१ योजन ऊंचा है जब कि चन्द्रलोक सम धरती से ८८० योजन ही ऊँचा है।

पृथ्वी के शाश्वत रूप मे कोई अन्तर नहीं आता है । यदि शाश्वत समानता का यही अर्थ है तो चन्द्र भी पृथ्वी जैसा ही शाश्वत है । अतः चन्द्रलोक से पत्थर या मिट्टी ले आना तथा चन्द्र पर मानव द्वारा भवन आदि का निर्माण कर सकना कोई असम्भव या असंगत कार्य नहीं है ।

चन्द्र–विमान का परिवहन

पृथ्वी के समान चन्द्रग्रह भी अपनी धुरी पर गतिमान रहता है, यह वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है, जब गति है तो उसका मूल्यांकन होना भी आवश्यक है। जैनागमो मे चन्द्र की गति का मापदड रूपक की भाषा में प्रस्तुत किया है।

चार हजार देव सिंह के रूप मे, चार हजार देव गज के रूप मे, चार हजार देव वृषभ के रूप में और चार हजार देव अश्व के रूप में चन्द्र विमान का परिवहन कर रहे हैं—यह विमान वाहक देव पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर मे रह कर चन्द्र विमान का वहन करते हैं।

भारतीय साहित्य के स्वाध्यायी यह अच्छी तरह जानते है कि सिंह, गज, वृषभ और अश्व शक्ति के प्रतीक हैं—भारवहन में गज, वृषभ और अश्व का प्रयोग तो समस्त संसार मे चिरकाल से चला आरहा है, सिंह यद्यपि भार-वहन मे प्रयुक्त नही होता फिर भी उसका शौर्य गज, वृषभ और अश्व से अत्यधिक है–यह सर्व विदित है। भारवहन और गति की तीव्रता का समन्वय करते हुये जैनाचार्यों ने दिव्य शक्ति को सिंह आदि के रूप में प्रस्तुत किया है—जिस प्रकार गणित विशेषज्ञ चार हजार अश्वशक्ति का मूल्यांकन करते हैं, उसी प्रकार गज, वृषभ और सिंहशक्ति का मूल्यांकन भी गणितज्ञ प्रस्तुत कर सकते हैं, चन्द्र गति का यह अनुमानिक मूल्यांकन जैनागमों मे अङ्कित है। आधुनिक वैज्ञानिको ने भी चन्द्र भार और चन्द्र गति का समीकरण किया है।

गरुड़, मयूर, हँस आदि भी रूपक की भाषा मे देव वाहन माने गये

है—पर इनका उपयोग चन्द्र विमान परिवहन मे नही किया है क्योंकि ये भारवहन और गति शक्ति के प्रतीक नही है ।

चन्द्र विमान परिवहन मे प्रयुक्त १६ हजार देव यदि देव ही हैं तो इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित जिज्ञासाये जागृत होती है।

१—१६ हजार देवों का अश्व, वृषभ, गज और सिंह के ही रूप मे ... करने का जो वर्णन है, वह एक नियम जैसा हो प्रतीत होता है। क्योंकि ... ग्रहो के विमानो का वहन करने वाले देव अश्व आदि के रूप मे ही ... गये है।

२— क्या देव अपनी दिव्य शक्ति से चन्द्र विमान को नही चला सकते ? देवो की दिव्य सकल्प शक्ति से तो यह कार्य अनायास ही हो सकता है।

३—यदि १६ हजार देव याव्वजीवन निरन्तर विमान वहन मे ही लगे रहेंगे तो उन्हे विश्राम कब मिलेगा ?

४. क्या चन्द्र विमान स्वचालित नही है ? यदि है तो देवो का वृषभादि रूप धारण करके विमान वहन मे निरन्तर लगे रहना क्या दिखावा मात्र है ? इत्यादि अनेक प्रश्नावलियो का समाधान करने की अपेक्षा चन्द्रादि विमान वहन के वर्णन को रूपक की भाषा मानकर ऊपर लिखे ढंग से सगति बिठायी जाये तो असगति तो नही होगी ?

चन्द्र स्वयं प्रकाशमान है ?

वैज्ञानिक चन्द्र को स्वयं प्रकाशमान् नही मानते । उनकी मान्यता यह है कि चन्द्र सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है; किन्तु जैनागम चन्द्र को स्वय प्रकाशमान मानते हैं। चन्द्र के पुद्गल (पार्थिवभाग) उद्योत नामकर्म के पुद्गल हैं। इन पुद्गलों से शीतल प्रकाश उत्पन्न होता है।

सूर्य उष्ण है। चन्द्र यदि सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है तो चन्द्र का प्रकाश अतिशीतल कैसे होता है। इसका समाधान जो वैज्ञानिकों ने

दिया है वह भी विचारणीय अवश्य है, किन्तु अपोलो ११ के अन्तरिक्ष यात्री जिस चन्द्र तल पर उतरे हैं उसके तापमान् का विवरण देखते हुये चन्द्रतल का अधिकतम शीतमान् मालूम नही होता।

"जिस प्रकार सूर्य के धरातल पर प्रति वर्ग इञ्च से ४५ अश्वबल (45 H.P) की शक्ति निकलती है उसी प्रकार चन्द्रतल से प्रति वर्गइञ्च कितने अश्वबल की शीत शक्ति निकलती है, इसका विवरण जानने पर किसी निर्णय पर पहुचा जा सकता है।

चन्द्रलोक की लम्बाई, चौड़ाई और परिधि

वैज्ञानिको ने चन्द्रलोक का व्यास लगभग २१६० मील माना है और जैनागमो मे चन्द्रलोक की लम्बाई-चौडाई $\frac{५६}{६१}$ योजन[1], मोटाई $\frac{२८}{६१}$ योजन और लम्बाई-चौडाई से परिधि तिगुनी मानी गई है। अर्थात् चन्द्रलोक की लम्बाई चौडाई ३६७२ कोस, मोटाई १८३६ कोस और परिधि लगभग ११०१६ कोस की है।

यह सामान्य अन्तर प्राचीन और अर्वाचीन माप प्रणाली का है जिसका समीकरण सम्भव है।

चन्द्र यात्रा का निमन्त्रण एक चुनौती है--

"अन्तरिक्ष यात्री माइकल कालिन्स ने अमेरिकी दूतावास में संवाद-दाताओ को बताया कि मेरे विचार से अगली बार की अन्तरिक्ष उड़ान में एक कवि, एक पादरी (एक धर्मोपदेशक साधु) और एक दार्शनिक को और शामिल करना चाहिये क्योकि ऐसा करने से जो कुछ हमने देखा है उसकी अनुभूति की अभिव्यक्ति अच्छी प्रकार से हो सकेगी।"

"दैनिक हिन्दुस्तान"

---

१ — जैनागमो मे शाश्वत वस्तुओ का माप ४००० कोस का एक योजन मान कर किया गया है।

आधुनिक वैज्ञानिको ने चन्द्रयात्रा का यह निमन्त्रण देकर प्राचीन दार्शनिक विज्ञान के श्रद्धालुओ को एक चुनौती दी है। आगम वर्णित चन्द्र की यथार्थता सिद्ध करने के लिये इस चुनौती को स्वीकार करने का कोई सत्साहस दिखायेगा ?

जो वहाँ जावेगा वह शाश्वत जिन प्रतिमाओं के दर्शन और चन्द्र देवे-न मिलन पाकर धन्य धन्य हो जायेगा और उससे चन्द्रयात्रा के संस्मरण कर जैन जगत भी अधिक से अधिक श्रद्धालु बन जायेगा।

आंखों देखा सत्य असत्य नहीं हो सकता

चन्द्र चर्चा से सम्बन्धित प्रश्न के उत्तर मे हमारे पूज्य मुनिराज महमा यह कह देते हैं कि ये वैज्ञानिक वर्तमान में न चन्द्रलोक मे पहुँचे हैं और न भविष्य में ही पहुँचेगे।

जहां ये वैज्ञानिक पहुँचे हैं वह स्थान किसी पर्वत की चूलिका या कूट का भाग है। वहा से ही यह मिट्टी और पत्थर के नमूने लाये हैं।

एक मुनिराज ने तो अपने निबन्ध मे यहा तक लिखने का साहस किया है कि ये वैज्ञानिक अन्तरिक्ष मे कुछ ऊँचाई तक जाकर ही लौट आते हैं।

अनेक मुनिराज इस चन्द्रयात्रा को रसिया और अमेरिका की प्रचार प्रतिस्पर्द्धा मात्र ही मानते हैं। किन्तु हमारे पूज्य मुनिराज इतना तो सोचे कि उन लाखो लोगो का आखो देखा सत्य असत्य कैसे हो सकता है, जिन्होने टेली-विजन पर आदि से अन्त तक चन्द्र यात्रा का कार्यक्रम देखा है।

अपोलो १२ का कार्यक्रम

अपोलो-१२ की यात्रा के दौरान खाली चन्द्रयान (लूनामोड्यूल) को चन्द्रतल पर टकराने, आधी मील तक पैदल चलने और पहले की अपेक्षा दूनी मात्रा मे चट्टानें जमा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस बार अधिक सख्या मे और अधिक सुधरे यन्त्रों की स्थापना की जावेगी तथा ऐसे नये रंगीन टेलीविजन कैमरे का प्रयोग किया जावेगा, जिससे अन्तरिक्ष-यात्रियो के

अपोलो–१२ मे सवार होने से लेकर चन्द्रतल पर उतरने की गतिविधियों के दृश्य विश्व भर के टेलीविजन दर्शक देख सके।

"दैनिक हिन्दुस्तान"

अमरीका २० वर्ष में सौर-मण्डल में बस्तियां बना लेगा

लन्दन ३० अक्तूबर (रा०) एक अमरीकी अन्तरिक्ष विशेषज्ञ ने कहा कि अगले २० वर्षो मे अमरीका सौरमण्डल मे बस्तियां बसाने में समर्थ हो जायेगा।

अमरीकी अन्तरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के निर्देशक डा० जार्जमूलर ने कहा कि अपोलो–११ की उपलब्धियों के बाद १९९० तक ऐसा करना सम्भव होगा।

डा० मूलर ने कहा कि आणविक उर्जा से चलने वाले "शटल" अन्तरिक्षयान, जो वापस पृथ्वी पर लौटने और सुविधापूर्वक उतरने मे समर्थ हों, का प्रयोग करने से १९८० तक परिक्रमा करने वाला अन्तरिक्ष केन्द्र बनाना सम्भव होगा। इसके बाद हम चन्द्रमा पर आधार केन्द्र बना कर 'शटल' से १९९० मे मगल ग्रह पर जा सकेगे।

'दैनिक हिन्दुस्तान'

गणित ज्योतिष का ज्ञान श्रमण के लिए आवश्यक है

साधु समाचारी का वर्णन करते हुये श्रमण दिनचर्या एव रात्रीचर्या में गणित ज्योतिष के ज्ञान की उपयोगिता अनिवार्य है। किस अयन, मास, पक्ष और दिन मे कितने पैर और कितने अगुल छाया आने पर (प्रहर) पोरुषी दिन होता है तथा आकाश मे कौनसा नक्षत्र किस जगह आने पर रात्री के प्रहर आरम्भ और समाप्त होते हैं। क्योकि दिन के प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय, द्वितीय मे ध्यान, तृतीय मे भिक्षाचर्या और चतुर्थ मे पुनः स्वाध्याय[१]

---

१. उत्तराध्ययन अ० २६

इसी प्रकार रात्रीचर्या के भी चार विभाग है, प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय, द्वितीय प्रहर मे ध्यान, तृतीय मे निद्रा और चतुर्थ प्रहर मे पुन: स्वाध्याय।

यद्यपि समय जानने के साधन आजकल सर्वत्र सुलभ है किन्तु श्रमण पर निर्भर रहना उचित नही माना जा सकता। अत स्वाध्याय आदि जानने के लिये ग्रह नक्षत्रो की गतिविधि का ज्ञान प्राप्त करना श्रमण ा का अनिवार्य अग है।

...नत ज्योतिष का ज्ञान भी सर्वथा हेय नहीं है।

चन्द्र आदि पाँच ज्योतिष्क लोको का वर्णन ज्योतिप के ग्रन्थो मे मलता है। ज्योतिष दो प्रकार का है। एक सिद्धान्त ज्योतिप दूसरा फलित ज्योतिष। आस्ट्रोलोजी और आस्ट्रोनोमी यथाक्रम से फलित और सिद्धान्त ज्योतिष है।

गणना द्वारा ग्रह नक्षत्रादि की गति सस्थान सचार, वेग आदि के नियम तथा ग्रहान्तर के साथ परस्पर सम्बन्ध जिससे स्थापित किया जाय, वह सिद्धान्त ज्योतिष है। इसको गणित ज्योतिष भी कहते हैं। यह सिद्धान्त ज्योतिष पाप श्रुत नही है, किन्तु फलित ज्योतिष पापश्रुत हो सकता है। क्योकि "शुभाशुभ फल का कथन करके आहार आदि प्राप्त करने वाला पाप श्रमण कहा जाता है।"[१] इस कथन से यह स्पष्ट है कि फलित ज्योतिष पाप श्रुत माना जा सकता है।

---

१. (क) उत्तराध्ययन अ० १७ गाथा १८ (ख) उत्तराध्ययन अ० १५ गाथा ७-८
(ग) ,, ,, ८ गाथा १३
(घ) दशवैकालिक अ० ७ गाथा ५० से ५३ तक
(ङ) दशवैकालिक अ० ८ गाथा ५१
(च) निशीथ सूत्र उ० १३ सूत्र ७९९ से ८०७

इन आगमो मे फलित ज्योतिष के प्रयोग का निषेध है और प्रायश्चित भी फलित ज्योतिष प्रयोग का ही दिया जाता है।

फलित ज्योतिष का वर्णन करने वाले शास्त्र भी सर्वथा पापश्रुत नहीं है। क्योंकि सम्यग्दर्शी के लिये मिथ्याश्रुत या पापश्रुत भी सम्यक्श्रुत है, ऐसा आगम वचन है।[१]

आठ प्रभावकों मे नैमित्तिक और सिद्ध प्रभावक का कर्त्तव्य यह नैमित्तिक–निमित्त ज्ञान से भूत, भविष्य और वर्तमान काल के हानि लाभ कर धर्म प्रभावना कर सकता है और सिद्ध-अंजन, पादलेप आदि सिद्धिय प्रदर्शन न करके जनसाधारण को अध्यात्ममार्ग की ओर आकृष्ट करता

सूर्यप्रज्ञप्ति में नक्षत्र भोजन का पाठ अन्य ग्रन्थों से उद्धृत है।

सूर्यप्रज्ञप्ति मे नक्षत्र-भोजन का पाठ एक ऐसा पाठ है, जिसे जैन संस्कृति से सामान्य परिचय रखने वाला भी जैन-संस्कृति सम्मत पाठ नही मान सकता। फिर भी आगमवेत्ता मुनिराज इस पाठ को सूर्यप्रज्ञप्ति का पाठ ही सिद्ध करते रहे हैं।[३]

मास वाचक शब्द का बनस्पति पूरक अर्थ करके संगति बैठाना और यह सिद्ध करना कि यह सूर्यप्रज्ञप्ति का ही पाठ है, केवल "वध्यास्तनुधय" जैसा प्रयत्न है।

सूर्यप्रज्ञप्ति में नक्षत्रों के नाम, तारे, गोत्र और देवता आदि जहां गिनाये गये है वहा नक्षत्रो का क्रम अभिजित् से प्रारम्भ होकर उत्तराषाढा पर समाप्त होता है। इसी गणनाक्रम को सूर्यप्रज्ञप्ति मे स्वसम्मत माना है। और अन्य क्रमो को पर सम्मत घोषित किया है। किन्तु नक्षत्र भोजन के क्रम

---

१. नदीसूत्र-सूत्र २. प्रवचनसारोद्धार

३. स्व० पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी महाराज सम्पादित सूर्यप्रज्ञप्ति

मे नक्षत्र गणना का क्रम कृत्तिका से प्रारम्भ होकर भरणी पर समाप्त होता है ।[१] यह नक्षत्र गणना का क्रम सूर्यप्रज्ञप्ति में अन्य (जैनेत्तर) सम्मत बर्था... ना गया है । यह करककणवत् स्पष्ट है । अत: आगमवेत्ता मुनिराज सतुसाहर भोजन पाठ को स्वसम्मत सिद्ध करने से पहले इन नक्षत्र गणना पर ध्यान दे तो अधिक उचित होगा ।

है... इस नक्षत्र भोजन के पाठ के अतिरिक्त अन्य जितने पाठ हैं वे सब ...न ज्योतिष के है । यही एक पाठ फलित ज्योतिष का है । इसलिये इस ...को किसी अन्य मतसम्मत ज्योतिष ग्रन्थ से उद्धृत मानें तो कोई हानि नही है । सम्भव है किसी ने अपनी प्रति पर अन्य ग्रन्थ से उद्धृत कर नक्षत्र भोजनो को प्राकृत मे परिवर्तित करके लिख लिया हो और उस प्रति की प्रतिलीपियो मे इस पाठ की पुनरावृत्ति होती रही हो ।

आश्चर्य तो यह है कि श्री मलयगिरी जैसे महान् आचार्य ने भी इस पाठ के सम्बन्ध मे किंचित् भी उहापोह न करते हुये टीका की है और टीका मे "भगवान् आह" लिख कर व्याख्या की है ।

नक्षत्रों के देवता[२] और गौत्र भी चन्द्रप्रज्ञप्ति मे लिखे है—इस सम्बन्ध मे भी मेरा यह स्पष्ट मत है कि ये नक्षत्रो के देवता और गौत्र किसी वेदांग ज्योतिष के किसी ग्रन्थ से उद्धृत किये गये है । ये पाठ प्राकृत मे है और चन्द्र प्रज्ञप्ति मे लिखे है, इसलिये हमारे मान्य है, यह कथन यथार्थ नही है । नक्षत्रो के देवता और गौत्र केवल जानकारी के लिये अन्य ग्रन्थ से उद्धृत किये गये हैं, यह मानना ही न्याय सगत है ।

---

१. नक्षत्र भोजन विधान के लिये देखिये—मुहूर्त चिन्तामणी पृष्ठ १३६ । यद्यपि यहां नक्षत्र गणना का क्रम अश्विनी से रेवती पर्यन्त है फिर भी इन नक्षत्र भोजनो मे मास का विधान है ।
२. मुहूर्त चिन्तामणी पृष्ठ २४ ।

माप प्रणाली में परिवर्तन

आगमकाल में जो माप प्रणाली प्रचलित थी उसका आधुनिक माप प्रणाली से किस प्रकार समीकरण किया जाय, यह एक विकट प्रश्न सामने है।

अंग्रेजो के शासनकाल में जो माप प्रणाली चला करती थी हमारे आपके देखते-देखते परिवर्तन हुआ है तो आगमकाल से लेकर अ की इस सुदीर्घ अवधि मे माप प्रणाली मे अनेक परिवर्तन अवश्य हुये है इसका इतिहास हमारे सामने नही है। अत: आगमकालीन माप प्रणा आधुनिक माप प्रणाली के साथ समन्वय करना अति कठिन है।

आगमकालीन माप प्रणाली के साधन अनिश्चित एव अस्थिर है।

आगमकालीन माप प्रणाली मे भूगोल, खगोल विषयक समस्त माप प्रमाणांगुल से कहा गया है। एक प्रमाणागुल के एक हजार उत्सेधागुल होते है। एक उत्सेधांगुल आठ यवमध्य का होता है।[1] अब यहा यह प्रश्न है कि किस काल और किस क्षेत्र के यव का मध्य भाग माप मे प्रयुक्त किया जाय? क्योंकि विभिन्न क्षेत्र और विभिन्न काल मे यव भी विभिन्न प्रकार के होते है। जू, लीक और बालाग्र (केश का अग्रभाग) भी इसी प्रकार विभिन्न देश काल मे विभिन्न प्रकार के होते है। यह प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आगमकालीन माप प्रणाली मे भी यह तथ्य स्वीकृत है।

---

१. (क) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति।

(ख) जैनो के दो प्रमुख सम्प्रदाय है—(१) श्वेताम्बर (२) दिगम्बर

श्वेताम्बर आगमो मे आठ यवमध्य का एक उत्सेधागुल माना गया है। उत्सेधागुल से हजार गुणा बडा प्रमाणागुल माना गया है। प्रमाणागुल से नरक, भवन, कल्प, वर्ष, वर्षधर पर्वत आदि की लम्बाई, चौडाई, ऊँचाई, गहराई और परिधि नापी जाती है। ४००० कोस का एक योजन शाश्वत वस्तुओ के मापने के लिये माना जाता है।

'अनुयोगद्वारसूत्र'

राजस्थान मे बैंगन छोटे होते हैं और देहली मे नारियल जैसे बड़े होते हैं। आम भी विभिन्न देशों मे विभिन्न प्रकार के होते हैं। इसी प्रकार ...देश काल मे यव, जूँ और बालाग्र का विभिन्न परिमाण होना सतुसाध्त है।

एक और आश्चर्य की बात है कि भरत क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र ही है विश्व की शाश्वत वस्तुओ के माप का साधन है। जहां विकासकाल ...पिणी) और ह्रास काल (अवसर्पिणी) का निरन्तर चक्र चलता है, जहा के मनुष्य का शरीर सदा अनिश्चित माप वाला होता है, उस ...रत क्षेत्र के मनुष्य का बालाग्र शाश्वत वस्तुओ के माप का मूल आधार है, यह कितनी विसगति है।

दिगम्बर ग्रन्थो मे भी आठ यव मध्य का उत्सेधागुल माना गया है। किन्तु एक उत्सेधांगुल से ५०० गुणा बडा प्रमाणागुल माना गया है। इसलिये २००० कोस के एक योजन से शाश्वत वस्तु मापी जाती है।

अब पाठक यह देखे कि श्वेताम्बरो का कथन सत्य है या दिगम्बरो का—दोनो सर्वज्ञप्रतिपादित आगम मानने वाले हैं।

हमारे पूज्य बहुश्रुतो का इस युग मे यह कर्त्तव्य है कि वे जैनागमो मे अङ्कित माप प्रणाली के साथ तुलनात्मक गाणितिक विधिया निर्धारित करे। अन्यथा नई पीढ़ी के जिज्ञासुओ का समाधान करने मे हमारा पूज्य श्रमणवर्ग समर्थ नही हो सकेगा।

creature went on, raising her eyes ecstatically to the fly-spotted ceiling. "You'll smell that 'eavenly! I'm sure all the gentlemen will go wild over you, and I promise you that the one you love will. It 'as the unfailing drawing-power."

"He's the only one that matters," I said, to humour her.

"Just what I've always said, dearie: 'be faithful to love, and your love will be faithful to you' . . . And now I've got something else to give you too."

She rummaged about and produced a little bottle of small, cherry-red pills.

"You get 'im to suck one of these," she exhorted me, "or, if you can't persuade 'im to do that, then slip one into 'is tea or 'is beer. Then if 'e was Good King Wenceslas 'imself 'e couldn't 'elp but fall in love with you."

When I got home I tasted one of the pills and found it was sugar-coated. Then I thought I would try the liquid. So I followed out my mentor's instructions carefully, and, when sufficient time seemed to have elapsed, removed the cotton-wool wrappings.

The perfume that rose to my nostrils was utterly unlike anything I had ever smelled before. I can only describe it—very inadequately, I fear—by saying that it was sweet and warm and languorous, and seemed to suggest something of the mysterious, sensuous Orient.

When I reported all this to the Major, he looked thoughtful.

"I'm beginning to think this must be the old woman I've heard about," he commented. "I know her speciality is aphrodisiacs. . . . By the way, I'm also beginning to think seriously that we might make some real use of her ghastly concoctions."

"What do you mean?" I asked.

He favoured me with a twisted smile, then took refuge, as usual, in the process of lighting his pipe.

"Well," he jerked out between his puffs, "there might conceivably arise situations when a completely irresistible Carla would be useful. . . . Anyway, learn all you can from the old hag, and let me know any developments."

So I continued to visit my fortune-teller, and one day, in pursuance of a notion which had come into my head, I made up a story about a man I wanted to compromise by putting him to sleep.

"Nothing easier, dearie, for them that 'as the luck to be on the right side of the 'mystery-people,'" the crone assured me. "Now did you ever 'ear tell of Flowers of Sleep, I wonder?"

I said I never had.